

डैनियल की पुस्तक - संख्या चार

तेज़ गिरावट

Jeff Pippenger

2023-11-27

हम लैव्यव्यवस्था अध्याय छब्बीस के "सात समय" पर, जैसा कि दानियेल की पुस्तक में प्रस्तुत है, चर्चा कर रहे हैं। हम ऐसा इसलिए कर रहे हैं क्योंकि "सात समय" की भविष्यवाणी-संबंधी विशेषताओं में से एक यह है कि यह उस "ठोकर के पत्थर" का प्रतिनिधित्व करता है जिसे भवन-निर्माताओं ने ठुकराया। मैं पवित्रशास्त्र में प्रस्तुत उस "ठोकर के पत्थर" को ऐसे सत्य के रूप में परिभाषित कर रहा हूँ जो देखा जा सकता है, पर देखा नहीं जाता। जो इसे देखते हैं, उनके लिए वह अनमोल है; पर जो नहीं देखते, उनके लिए वह केवल ठोकर का कारण ही नहीं, बल्कि वह पत्थर भी है जो उन्हें पीसकर चूर्ण कर देता है।

जब मसीह ने उस पत्थर का उल्लेख किया जिसे राजमिस्त्रियों ने ठुकरा दिया था, तो उन्होंने बताया कि वही कोने का पत्थर कोने का 'सिर' बन जाएगा। पवित्रशास्त्र में ठुकराए हुए पत्थर का संदेश हमेशा इस बात से संबंधित होता है कि परमेश्वर पूर्व वाचा के लोगों को छोड़ देता है, और उसी समय परमेश्वर उन लोगों के साथ वाचा बाँधता है जो पहले परमेश्वर के लोग नहीं थे।

यीशु ने उनसे कहा, क्या तुमने पवित्र शास्त्रों में कभी नहीं पढ़ा: 'जिस पत्थर को राजमिस्त्रियों ने ठुकराया, वही कोने का सिरा बन गया; यह प्रभु की ओर से हुआ है, और यह हमारी आंखों में अद्भुत है'? इसलिए मैं तुमसे कहता हूँ, परमेश्वर का राज्य तुमसे ले लिया जाएगा और उसे ऐसी जाति को दिया जाएगा जो उसके फल उत्पन्न करेगी। और जो कोई इस पत्थर पर गिरेगा, वह चूर-चूर हो जाएगा; पर जिस पर यह गिरेगा, उसे पीसकर चूर कर देगा। मत्ती 21:42-44.

पवित्र स्वर्गदूतों ने जिन 'समय की भविष्यवाणियों' की ओर विलियम मिलर का मार्गदर्शन किया, उनमें पहली थी लैव्यव्यवस्था 26 के 'सात समय'। लाओदीकियाई एडवेंटवाद ने मिलर की खोजों में सबसे पहली को अस्वीकार करके, उन बुनियादी सत्यों को ढहाने की प्रक्रिया शुरू की जिन्हें प्रभु ने मिलर की सेवकाई के माध्यम से समेकित किया था। निस्संदेह, किसी पवित्र नींव का कोई भी भविष्यसूचक निरूपण मसीह का ही निरूपण है, जो 'वह पत्थर' हैं; इसलिए 1863 में 'सात समय' का अस्वीकार न केवल बुनियादी सत्यों को अस्वीकार करने की प्रक्रिया की शुरुआत को चिन्हित करता है, बल्कि यह मसीह के अस्वीकार का भी प्रतिनिधित्व करता है। जैसे अस्वीकृत पत्थर के विषय में मसीह की गवाही है, वैसे ही पतरस भी यह बताता है कि आधार-शिला से जुड़ी भविष्यवाणियों में से एक यह है कि वह अंततः 'कोने का सिरा' बन जाएगी।

इसलिये पवित्रशास्त्र में भी लिखा है: देखो, मैं सिय्योन में एक कोने का मुख्य पत्थर रखता हूँ—चुना हुआ, बहुमूल्य; और जो उस पर विश्वास करेगा, वह लज्जित न होगा। अतः तुम जो विश्वास करते हो, तुम्हारे लिये वह बहुमूल्य है; परन्तु जो अवज्ञाकारी हैं, वही पत्थर जिसे राजमिस्त्रियों ने अस्वीकार किया था, कोने का सिरा बना दिया गया है, और वह ठोकर का पत्थर तथा ठेस की चट्टान ठहरा—उनके लिये जो वचन पर ठोकर खाते हैं, क्योंकि वे अवज्ञाकारी हैं; और इसी लिये वे ठहराए भी गए थे। परन्तु तुम एक चुना हुआ वंश, राजकीय याजकता, पवित्र जाति, एक विशेष प्रजा हो, ताकि तुम उसके गुण प्रगट करो जिसने तुम्हें अन्धकार से निकालकर अपनी अद्भुत ज्योति में बुलाया है—जो पहले कोई प्रजा न थे, पर अब परमेश्वर की प्रजा हो गए हो; जिन्होंने पहले दया नहीं पाई थी, पर अब दया पाई है। 1 पतरस 2:6-8.

एडवेंटवाद के प्रारंभ में जो आधार शिला थी, वही कोने का सिरा हो जाती है। यशायाह इस विषय में मसीह और पतरस से सहमत है, और वह उस आधार शिला का उपयोग उन वाचा के लोगों का प्रतिनिधित्व करने के लिए करता है

जिन्हें नई वाचा की प्रजा के लिए दरकिनार किया जा रहा है। अपनी गवाही में वह उस वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है जिसने मृत्यु के साथ वाचा बाँधी है, और जिसने एक झूठ को स्वीकार किया है। जो झूठ वे स्वीकार करते हैं, वही वह झूठ है जिसे पौलुस इस रूप में पहचानता है कि वह मृत्यु के साथ वाचा बाँधने वालों पर बलवान भ्रम लाता है, क्योंकि उन्होंने सत्य के प्रेम को ग्रहण नहीं किया।

इसलिए, हे ठट्टा करने वालों, जो यरूशलेम में स्थित इस प्रजा पर शासन करते हो, प्रभु का वचन सुनो। क्योंकि तुमने कहा है, हमने मृत्यु के साथ वाचा बाँधी है, और अधोलोक के साथ समझौता किया है; जब वह उमड़ती हुई ताड़ना होकर गुज़रेगी, तो वह हम तक न पहुँचेगी; क्योंकि हमने झूठ को अपना शरणस्थान बना लिया है, और मिथ्या के नीचे हमने अपने आप को छिपा लिया है। इसलिए प्रभु परमेश्वर यूँ कहता है: देखो, मैं सिध्दोन में नींव के लिए एक पत्थर रखता हूँ—परखा हुआ पत्थर, बहुमूल्य कोने का पत्थर, दृढ़ नींव; जो उस पर विश्वास करेगा वह घबराकर जल्दबाज़ी न करेगा। मैं न्याय को नाप की रेखा और धर्म को सीसे की डोरी ठहराऊँगा; और ओले झूठ के शरणस्थान को उड़ा देंगे, और जल छिपने की जगह को उमड़कर बहा ले जाएगा। और तुम्हारी मृत्यु के साथ की वाचा रद्द कर दी जाएगी, और अधोलोक के साथ का तुम्हारा समझौता ठहर न सकेगा; जब वह उमड़ती हुई ताड़ना होकर गुज़रेगी, तब तुम उससे कुचले जाओगे। यशायाह 28:14-18.

"सात समय" को झूठ की परतों के नीचे छिपा दिया गया है, और जब परमेश्वर अपने पूर्व वाचा के लोगों को छोड़कर एक लाख चवालीस हज़ार के साथ वाचा में प्रवेश करते हैं, तब वह पत्थर, जो पहले अस्वीकार किया गया कोने का पत्थर था, ऊपर उठकर कोने का "शीर्ष" बन जाएगा। जो इस सत्य को समझते हैं, उनके लिए यह अनमोल है, और जो नहीं समझते, उनके लिए कोने का शीर्ष बनने वाला वही पत्थर न केवल उन्हें कुचल देता है, बल्कि रूपक रूप में उनकी समाधि-शिला भी बन जाता है।

दानियेल की पुस्तक में, अध्याय आठ और पद उन्नीस में, हमें क्रोध का 'अंतिम अंत' मिलता है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि क्रोध का 'प्रथम अंत' भी होना चाहिए। 677 ईसा पूर्व से 22 अक्टूबर, 1844 तक का समय वह अवधि दर्शाता है जब पवित्रस्थान (और सेना) को रौंदा जाता रहा। परन्तु दानियेल अध्याय ग्यारह, पद छत्तीस के अनुसार, पपाई सत्ता को तब तक फलना-फूलना था जब तक कि वह क्रोध पूरा न हो जाए। यदि अध्याय आठ में क्रोध का अंत किसी समयावधि की समाप्ति का प्रतिनिधित्व करता है, तो अध्याय ग्यारह में क्रोध का अंत भी किसी समयावधि की समाप्ति का प्रतिनिधित्व करता है। बाइबल यही स्पष्ट रूप से सिखाती है, यद्यपि इस सत्य को उन लोगों ने झूठ से ढँक दिया है जिन्होंने मृत्यु के साथ वाचा बाँधी है।

दोनों प्रकोपों की समाप्ति एक ही समयावधि के अंत को दर्शाती है, क्योंकि दोनों ही तितर-बितर, बंधुआई और दासत्व के पच्चीस सौ बीस वर्षों वाले उसी शाप की पूर्ति थे। उत्तरी राज्य ने सबसे पहले "सात समय" के तितर-बितर, बंधुआई और दासत्व को सहा, जब 723 ईसा पूर्व में अशूर के राजा ने उन्हें बंदी बना लिया। दक्षिणी राज्य ने 677 ईसा पूर्व में वही दशा भोगी। यिर्मयाह इस तथ्य की पुष्टि करता है।

इसाएल एक बिखरी हुई भेड़ है; सिंहीं ने उसे खदेड़ दिया है: पहले अशूर के राजा ने उसे निगल लिया है; और अंत में इस बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर ने उसकी हड्डियाँ तोड़ दी हैं। यिर्मयाह 50:17.

यिर्मयाह एक क्रमिक न्याय की पहचान कर रहा है। अशूरियों ने 723 ईसा पूर्व में उत्तरी राज्य को समाप्त कर दिया, फिर 677 ईसा पूर्व में वे मनश्शे को अपनी राजधानी नगर बाबेल ले गए। फिर नबूकदनेस्सर यहोयाकीम को बंदी बना लेता है, और इस प्रकार 606 ईसा पूर्व में सत्तर वर्षों की बंधुआई की शुरुआत चिन्हित होती है। फिर नबूकदनेस्सर सिदकिय्याह को पकड़ लेता है और 586 ईसा पूर्व में यरूशलेम को नष्ट कर देता है।

दक्षिणी राज्य को चेतावनी दी गई थी कि यदि वे अपने विद्रोह को जारी रखते, तो उन्हें उत्तरी राज्य जैसा ही भाग्य भोगना पड़ेगा। उत्तरी राज्य का न्याय दक्षिणी राज्य पर लागू किया जाएगा, और उस न्याय का प्रतीक एक डोरी थी, जिसे यहूदा पर ताना जाना था। यशायाह की गवाही में इसे केवल "डोरी" कहा गया है, पर अगले खंड में यह "डोरी" "सामरिया की डोरी" है।

इस कारण इस्राएल का परमेश्वर यहोवा यों कहता है: देखो, मैं यरूशलेम और यहूदा पर ऐसी विपत्ति ला रहा हूँ कि जो कोई उसके विषय में सुनेगा, उसके दोनों कान झनझना उठेंगे। और मैं यरूशलेम पर सामरिया की नापने की डोरी और अहाब के घराने का सीसा तानूँगा; और मैं यरूशलेम को ऐसे पोंछ डालूँगा जैसे कोई थाली पोंछता है—उसे पोंछकर उलटा कर देता है। और मैं अपनी विरासत के बचे हुआओं को त्याग दूँगा, और उन्हें उनके शत्रुओं के हाथ में सौंप दूँगा; और वे अपने सब शत्रुओं के लिए शिकार और लूट बन जाएँगे; क्योंकि उन्होंने मेरी दृष्टि में बुरा किया है, और मुझे क्रोध दिलाया है, जिस दिन से उनके पूर्वज मिस्र से निकले, आज तक। 2 राजा 21:12-15.

अभी उद्धृत पदों में दो भविष्यवाणी संबंधी अभिव्यक्तियाँ हैं जिन पर विचार करना आवश्यक है। पहली है कानों की झनझनाहट, और दूसरी है साहुल। इन पदों में 'समरिया की रेखा' को 'आहाब के घराने के साहुल' के रूप में भी पहचाना गया है। रेखा और साहुल न्याय के ऐसे उपकरण हैं, जो निर्माण-प्रक्रिया में प्रयुक्त होते हैं। इन पदों में वे यह दर्शाते हैं कि जिस प्रकार का न्याय उत्तरी राज्य पर—जिसे समरिया और आहाब के घराने द्वारा प्रतिनिधित्व किया गया है—किया गया था, वही यहूदा और यरूशलेम पर भी लाया जाएगा। जब यह चेतावनी दी गई, तब इस्राएल का उत्तरी राज्य पहले ही आक्रांत, विजित, नष्ट किया जा चुका था और उसके लोग दासत्व में ले जाए गए थे। परमेश्वर के न्याय का संदेश चेतावनी सुनने वालों के कानों में झनझनाहट उत्पन्न करता है। शास्त्रों में साहुल और कानों की झनझनाहट—दोनों—का उल्लेख तीन-तीन बार मिलता है। प्रत्येक प्रसंग में वे परमेश्वर के अपने ही लोगों के विरुद्ध उसके रोष का प्रतिनिधित्व करते हैं।

और प्रभु आया, खड़ा हुआ, और पहले की तरह पुकारा, 'शमूएल, शमूएल।' तब शमूएल ने उत्तर दिया, 'बोल, क्योंकि तेरा दास सुन रहा है।' तब प्रभु ने शमूएल से कहा, 'देख, मैं इस्राएल में ऐसा काम करूँगा कि जिसे सुनकर हर एक के दोनों कान झनझना उठेंगे। उस दिन मैं एली के विरुद्ध वे सब बातें पूरी करूँगा जो मैंने उसके घराने के विषय में कही हैं; जब मैं आरंभ करूँगा, तब मैं समाप्त भी कर दूँगा।' 1 शमूएल 3:10-12.

एली के घराने का पतन वह भविष्यवाणी है जिसे जो कोई सुने, उसके दोनों कान झनझना उठें। शमूएल के समय में कानों का झनझनाना, एली के घराने के हटाए जाने का प्रतीक है। शमूएल को दी गई भविष्यवाणी की पूर्ति एली के घराने के पतन और शमूएल के भविष्यद्वक्ता के रूप में स्थापना में हुई। शमूएल उन लोगों का प्रतिनिधित्व करता है जो, जैसा पतरस कहता है, पहले परमेश्वर के लोग न थे, पर अब हैं; क्योंकि जब शमूएल को भविष्यद्वक्ता के रूप में स्थापित किया गया, तब एली का घराना नष्ट कर दिया गया। यिर्मयाह भी यरूशलेम के नेतृत्व के विरुद्ध ऐसा न्याय घोषित करता है जिससे कान झनझना उठें।

और कहो, हे यहूदा के राजाओं और यरूशलेम के निवासियों, यहोवा का वचन सुनो: सेनाओं का यहोवा, इस्राएल का परमेश्वर, यों कहता है: देखो, मैं इस स्थान पर ऐसी विपत्ति लाऊँगा कि जो कोई उसे सुनेगा, उसके कान झनझना उठेंगे। यिर्मयाह 19:3.

कानों में सनसनाहट के तीनों संदर्भ उस वाचा-जन से जुड़े हैं जिन्होंने मृत्यु के साथ वाचा बाँधी है, और उसके बाद उन पर आक्रमण हुआ, वे विजित हुए, नष्ट कर दिए गए, तितर-बितर कर दिए गए, और दासत्व में ले जाए गए। कानों की यह सनसनाहट परमेश्वर के रोष के न्याय का प्रतीक है, और उस न्याय का यह प्रतीक शास्त्रों में "plummet" शब्द के साथ तीन बार भी प्रस्तुत किया गया है। हम इसे पहले ही 2 राजा और यशायाह में पढ़ चुके हैं, लेकिन शास्त्रों में "plummet" का एक और उल्लेख है, और उस उल्लेख में "plummet" शब्द पहले दो संदर्भों से भिन्न एक हिब्रू शब्द से अनूदित है।

और वह स्वर्गदूत जो मुझ से बातें करता था, फिर आया और मुझे जगाया, जैसे कोई मनुष्य अपनी नींद से जगाया जाता है; और उसने मुझ से कहा, तू क्या देखता है? मैंने कहा, मैंने देखा है कि, देखो, सोने का एक दीपदान है, जिसकी चोटी पर एक कटोरा है; और उस पर उसके सात दीपक हैं, और ऊपर उन सात दीपकों के लिए सात नलियाँ; और उसके पास दो जैतून के पेड़ हैं—एक कटोरे के दाहिने ओर और दूसरा उसके बाएँ ओर। तब मैंने

उत्तर देकर उस स्वर्गदूत से, जो मुझ से बातें करता था, कहा, हे मेरे प्रभु, ये क्या हैं? तब उस स्वर्गदूत ने, जो मुझ से बातें करता था, उत्तर दिया और मुझ से कहा, क्या तू नहीं जानता कि ये क्या हैं? मैंने कहा, नहीं, हे मेरे प्रभु। तब उसने उत्तर देकर मुझ से कहा, यह वचन जरुब्बाबेल के लिये यहोवा की ओर से है: न तो पराक्रम से, न ही शक्ति से, परन्तु मेरी आत्मा से, ऐसा सेनाओं का यहोवा कहता है। हे बड़े पहाड़, तू कौन है? जरुब्बाबेल के सामने तू समतल भूमि बन जाएगा; और वह उसके शिरोपत्थर को जयजयकार के साथ निकालेगा, यह पुकारते हुए, 'अनुग्रह, अनुग्रह उस पर हो!' फिर यहोवा का वचन मुझ पर आया, कि: जरुब्बाबेल के हाथों ने इस घर की नेव डाली है; उसके ही हाथ इसे पूरा भी करेंगे; और तब तुम जानोगे कि सेनाओं के यहोवा ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है। क्योंकि किस ने छोटे आरम्भ के दिन को तुच्छ जाना? वे तो आनन्द करेंगे, और जरुब्बाबेल के हाथ में सीसे की डोरी को उन सातों के साथ देखेंगे; वे यहोवा की आँखें हैं, जो सारी पृथ्वी में इधर-उधर फिरती रहती हैं। तब मैंने उत्तर दिया और उससे कहा, इस दीपदान के दाहिनी ओर और बाईं ओर के ये दो जैतून के पेड़ क्या हैं? और मैंने फिर से उत्तर दिया और उससे कहा, वे दो जैतून की डालियाँ क्या हैं जो दो सुनहरी नलियों के द्वारा अपने में से सुनहरा तेल उंडेलती हैं? तब उसने मुझ से कहा, क्या तू नहीं जानता कि ये क्या हैं? मैंने कहा, नहीं, हे मेरे प्रभु। तब उसने कहा, ये दो अभिषिक्त हैं, जो सम्पूर्ण पृथ्वी के प्रभु के पास खड़े रहते हैं। जकरयाह 4:1-14.

द्वितीय राजाओं और यशायाह 28 में "plummet" के रूप में जिसका अनुवाद किया गया है, वह शब्द "mishqâl" है, और उसका अर्थ एक भार होता है। दोनों अंशों में डोरी में एक भार (plummet) जोड़े जाने वाला था। भार वही है जो तराजू में प्रयोग होता है, और न्याय का प्रतिनिधित्व करता है। भार लगी डोरी न्याय की डोरी है। समारिया की रेखा "सात काल," अर्थात् 2520 वर्षों की अवधि थी। यही अवधि, जो उत्तरी राज्य पर लाई गई थी, दक्षिणी राज्य पर भी रखी जाने वाली थी। इन दोनों में से किसी भी रेखा का अंत दानिय्येल की पुस्तक में या तो अंतिम प्रकोप के अंत के रूप में, या प्रथम प्रकोप के अंत के रूप में पहचाना गया है। यह अवधि दानिय्येल में उस समय के रूप में दर्शाई गई है जब यरूशलेम और सेना को मूर्तिपूजा और पापलवाद की दो उजाड़ने वाली शक्तियों द्वारा रौंदा जाना था। दोनों अवधियों की शुरुआत तब होती जब उनकी-उनकी राजधानियों पर आक्रमण किया जाता, उन्हें जीतकर नष्ट कर दिया जाता, और उनके नागरिकों को दासत्व में ले जाया जाता।

लेकिन जकरयाह में, "plummet" शब्द दो इब्रानी शब्दों के संयोजन से बना है। पहला शब्द "'eben" है; इसका अर्थ "निर्माण करना" है, और यह "पत्थर" का भी अर्थ देता है। अर्थात् "निर्माण का पत्थर"। फिर इस शब्द को इब्रानी शब्द "bedîyl" के साथ जोड़ा गया है, जिसका अर्थ "विभाजित करना या अलग करना" है। जकरयाह में "plummet" वह पत्थर है जिस पर निर्माण किया जाता है और जो अलगाव व विभाजन उत्पन्न करता है। यह विभाजन उपासकों की दो श्रेणियों के बीच है: एक श्रेणी जो पत्थर को देखकर आनन्दित होती है, उसे अपने कोने का मुख्य पत्थर बनाती है और उस पर निर्माण करती है; और दूसरी जो उसे देखती ही नहीं, उसे अस्वीकार करती है, उस पर ठोकर खाती है, और अंततः उसी से कुचली जाती है—जो तब उनके लिए शिरोशिला या समाधि-शिला बन जाता है। एक श्रेणी जीवन से वाचा करती है, दूसरी मृत्यु की वाचा करती है।

जकरयाह के इतिहास में, प्राचीन इस्राएल यरूशलेम का पुनर्निर्माण और पुनर्स्थापना करने के लिए अभी-अभी बाबुल से निकलकर आया था। जरुब्बाबेल को राज्यपाल नियुक्त किया गया, और उसे कार्य की देखरेख करनी थी। उसने काम की शुरुआत में नींव का पत्थर रखा और काम के अंत में शीर्ष पत्थर, या समापन-पत्थर, स्थापित किया। 'जरुब्बाबेल' का अर्थ है 'बाबुल की संतान'। सारी भविष्यवाणियाँ अंतिम दिनों की ओर इंगित करती हैं, और 'जरुब्बाबेल' का नाम उस समय पहले स्वर्गदूत के संदेश के इतिहास का प्रतीक है जब नींव का पत्थर रखा गया था, और उसका नाम उस समय तीसरे स्वर्गदूत के संदेश का भी प्रतीक है जब शीर्ष पत्थर, या समापन-पत्थर, रखा जाता है। पहले आंदोलन में हो या दूसरे आंदोलन में, पवित्र आत्मा के उंडेले जाने के प्रगटीकरण को 'जरुब्बाबेल' (बाबुल की संतान) के नाम द्वारा दर्शाया गया है, क्योंकि यह उस संदेश का प्रतिनिधित्व करता है जो 'बाबुल की संतान' की अंतिम पीढ़ी को बाहर आने के लिए बुलाता है। यह 'मध्यरात्रि के आह्वान' के उस संदेश का प्रतिनिधित्व करता है जो पहले आंदोलन में हुआ था, और जो 'प्रबल पुकार' के अंतिम आंदोलन में होने ही वाला है।

दो जैतून के पेड़, दो जैतून की डालियाँ, और वे दो अभिषिक्त जो उन पात्रों का प्रतिनिधित्व करते हैं जिनमें दो सुनहरी नलियाँ तेल उंडेलती हैं:

"सम्पूर्ण पृथ्वी के प्रभु के समीप खड़े हुए अभिषिक्तजन उस पद पर हैं जो कभी शैतान को आच्छादन करने वाले करूब के रूप में दिया गया था। अपने सिंहासन के चारों ओर स्थित पवित्र प्राणियों के द्वारा प्रभु पृथ्वी के निवासियों के साथ निरन्तर संपर्क बनाए रखते हैं। स्वर्ण तेल उस अनुग्रह का प्रतीक है जिसके द्वारा परमेश्वर विश्वासियों के दीपकों में निरन्तर पूर्ति करता है, ताकि वे टिमटिमाकर बुझ न जाएँ। यदि स्वर्ग से, परमेश्वर की आत्मा के संदेशों के माध्यम से, यह पवित्र तेल न उण्डेला जाता, तो बुराई की शक्तियाँ मनुष्यों पर सम्पूर्ण नियंत्रण कर लेतीं।"

"जब हम वे संदेश स्वीकार नहीं करते जो वह हमें भेजता है, तब परमेश्वर का अनादर होता है। इस प्रकार हम उस स्वर्ण तेल को अस्वीकार कर देते हैं जिसे वह हमारे प्राणों में इसलिये उंडेलना चाहता है कि उसे अन्धकार में पड़े हुआ तक पहुँचाया जाए। जब यह पुकार सुनाई देगी, 'देखो, दूल्हा आ रहा है; उससे मिलने चलो,' तो जिन्होंने पवित्र तेल प्राप्त नहीं किया, जिन्होंने अपने हृदयों में मसीह के अनुग्रह को नहीं सँजोया, वे मूर्ख कुँवारियों के समान पाएँगे कि वे अपने प्रभु से मिलने के लिये तैयार नहीं हैं। उनके अपने भीतर वह सामर्थ्य नहीं है कि वे वह तेल प्राप्त कर सकें, और उनके जीवन नष्ट-भ्रष्ट हो जाते हैं। परन्तु यदि परमेश्वर के पवित्र आत्मा के लिये माँगा जाए, यदि हम मूसा के समान विनती करें, 'मुझे अपनी महिमा दिखा,' तो परमेश्वर का प्रेम हमारे हृदयों में उंडेल दिया जाएगा। स्वर्ण नलिकाओं के माध्यम से स्वर्ण तेल हम तक पहुँचाया जाएगा। 'न तो शक्ति से, न पराक्रम से, परन्तु मेरी आत्मा से, सेनाओं के यहोवा की यह वाणी है।' धर्म के सूर्य की दीप्तिमान किरणों को ग्रहण करके, परमेश्वर की सन्तानें जगत में ज्योतियों के समान चमकती हैं।" Review and Herald, July 20, 1897.

जकरयाह ने बार-बार पूछा था कि वे दो जैतून के वृक्ष कौन थे, इस प्रकार दो गवाहों के विभिन्न प्रतीकों की ओर ध्यान आकर्षित किया। सीस्टर वाइट दो जैतून के वृक्षों को प्रकाशितवाक्य के ग्यारहवें अध्याय के दो गवाहों के रूप में पहचानती हैं।

"दो गवाहों के विषय में भविष्यद्वक्ता आगे यह घोषित करता है: 'ये पृथ्वी के परमेश्वर के सामने खड़े दो जैतून के वृक्ष और दो दीपदान हैं।' 'तेरा वचन,' भजनकार ने कहा, 'मेरे पांव के लिए दीपक, और मेरे मार्ग के लिए उजियाला है।' प्रकाशितवाक्य 11:4; भजन संहिता 119:105। ये दो गवाह पुराने और नये नियम के पवित्र शास्त्रों का प्रतिनिधित्व करते हैं।" The Great Controversy, 267.

जकरयाह यह समझना चाहता था कि ये दो गवाह कौन थे। फ्रांसीसी क्रांति में वे पुराना और नया नियम थे। उन्हें मूसा और एलियाह के रूप में प्रस्तुत किया गया था, जिन्हें अथाह कुंड से ऊपर आने वाले पशु ने सड़क पर मार डाला। वे Future for America की सेवकाई का प्रतिनिधित्व करते हैं, जिसे 18 जुलाई, 2020 को मार डाला गया था।

अध्याय की शुरुआत में, जकरयाह के जगाए जाने के बाद, जब मृत, सूखी हड्डियाँ एकत्र की जाती हैं, पर वे अभी जीवित नहीं हुई हैं, तब गब्रिएल पूछता है, "तू क्या देखता है?" जकरयाह जो उसने देखा है उसका वर्णन करता है, और फिर पूछता है, "हे मेरे प्रभु, ये क्या हैं?" गब्रिएल प्रश्न के विषय पर जोर देने के लिए जकरयाह के प्रश्न का उत्तर एक प्रश्न से देता है। वह जकरयाह से पूछता है, "क्या तू नहीं जानता कि ये क्या हैं?" तब गब्रिएल उत्तर देता है, "यह जरुब्बाबेल के लिए यहोवा का वचन है: न तो सामर्थ्य से, न शक्ति से, परन्तु मेरी आत्मा के द्वारा, सेनाओं का यहोवा कहता है।"

जरुब्बाबेल को दिया गया प्रभु का वचन यह था: "न तो सामर्थ्य से, न ही पराक्रम से, परन्तु मेरे आत्मा के द्वारा। हे बड़े पर्वत, तू कौन है? जरुब्बाबेल के सामने तू समतल हो जाएगा; और वह जय-जयकार के साथ उसका शीर्ष पत्थर निकालेगा, यह पुकारते हुए, 'उस पर अनुग्रह, अनुग्रह!'"

प्रान्तपाल ज़रुब्बाबेल उस दूत का प्रतिनिधित्व करता है जो इतिहास के प्रारम्भ और अंत में मार्ग तैयार करता है, जिसके सामने पहाड़ समतल मैदान बन जाता है। यशायाह उसी दूत के कार्य का वर्णन करता है और कहता है कि वह "मरुस्थल में हमारे परमेश्वर के लिये एक राजमार्ग सीधा करेगा," और वह "हर एक तराई" को "ऊँचा करेगा।" वह "हर एक पहाड़ और टीले" को भी "नीचा करेगा," क्योंकि प्रान्तपाल ज़रुब्बाबेल के सामने "बड़ा पहाड़" "मैदान हो जाएगा।"

विलियम मिलर को "सात समय" का संदेश परमेश्वर ने दिया था। ज़रुब्बाबेल, विलियम मिलर का प्रतिनिधित्व करता है, जिसने "सात समय" की नींव की शिला रखी; और वह उन हाथों का भी प्रतिनिधित्व करता है जो "शीर्ष-शिला" को "जयजयकार करते हुए, पुकारते हुए, अनुग्रह, अनुग्रह उस पर" के साथ बाहर लाएँगे। "अनुग्रह" शब्द के दुहराव से मध्यरात्रि की पुकार के संदेश का प्रतिनिधित्व होता है। "जयजयकार" वही संदेश दर्शाता है जिसे तीसरे स्वर्गदूत की ऊँची पुकार दर्शाती है, और "पुकार" मध्यरात्रि की पुकार का प्रतिनिधित्व करती है। पूरा अंश मध्यरात्रि की पुकार के संदेश के विषय में है। यह उन कुँवारियों के बारे में है जो प्रकाशितवाक्य ग्यारह की गलियों में मृत्यु की नींद सोई हुई थीं, जो मरी हुई सूखी हड्डियों की घाटी से होकर गुजरती हैं। यह मरी हुई सूखी हड्डियों के पुनरुत्थान के बारे में है, और यह "सीसा की डोरी" की भविष्यवाणी-संबंधी भूमिका के बारे में है, जिसे बुद्धिमान कुँवारियाँ देखती हैं और जिससे वे आनन्दित होती हैं।

तब जकरयाह कहता है, "इसके अलावा।" "इसके अलावा" का अर्थ है अगले खंड को पिछले खंड पर अधिरोपित करना। यह "रेखा पर रेखा" के भविष्यसूचक सिद्धांत का संदर्भ है। पिछले संवाद ने आधी रात को परमेश्वर के लोगों के जाग उठने की बात पहचानी, जिनका प्रतिनिधित्व जकरयाह करता है। पिछले संवाद ने बार-बार इस इच्छा पर बल दिया कि अंतिम दिनों में परमेश्वर के लोग समझें कि प्रकाशितवाक्य अध्याय ग्यारह के वे दो गवाह कौन हैं। पिछले संवाद ने यह भी पहचाना कि ज़रुब्बाबेल प्रथम आंदोलन के कार्य का और साथ ही अंतिम आंदोलन के कार्य का प्रतिनिधित्व करता है। इसमें बताया गया कि ज़रुब्बाबेल के "हाथ" (जो मानव शक्ति का प्रतिनिधित्व करते हैं) नींव का पत्थर और शीर्ष पत्थर रखने वाले थे, परन्तु उसके हाथों का कार्य केवल सांत्वनादाता की दैवीय शक्ति के द्वारा ही पूरा हुआ है और होता है।

इसके बाद हुआ संवाद, जिसे पिछले संवाद के ऊपर रखा जाना है, यह स्पष्ट करता है कि जब "ज़रुब्बाबेल के हाथ" कार्य पूरा कर रहे होंगे, तब अंतिम दिनों में परमेश्वर के लोग "जानेंगे कि प्रभु ने" "भेजा" गेब्रियल, प्रकाशवाहक, "की ओर" परमेश्वर के लोगों। वे उस स्वर्गीय संप्रेषण प्रक्रिया को पहचानेंगे जो यीशु मसीह के प्रकाशितवाक्य से संबंधित रूप में प्रस्तुत पहली सच्चाई है। ज़रुब्बाबेल के संदेश और कार्य को अस्वीकार करना, उस संदेश को अस्वीकार करना है जो गेब्रियल से आता है, जिसे उसने मसीह से प्राप्त किया, और जिसे मसीह ने आगे चलकर पिता से प्राप्त किया।

तब आराधकों के दो वर्ग परिभाषित होते हैं। एक वर्ग "छोटी बातों के दिन को तुच्छ जानता है।" दूसरा वर्ग तब "आनंद करेगा" जब वे "ज़रुब्बाबेल के हाथ में 'साहुल' उन सात के साथ" देखेंगे, जो "यहोवा की आँखें हैं, जो सारी पृथ्वी पर इधर-उधर दौड़ती फिरती हैं।" जो छोटी बातों के दिन को तुच्छ जानते हैं, वे "साहुल" द्वारा निरूपित विलियम मिलर के ऐतिहासिक कार्य का तिरस्कार करते हैं। उनकी तुलना उनसे की गई है जो "साहुल" को ज़रुब्बाबेल के हाथ में देखकर आनंदित होते हैं। जकरयाह का "साहुल" वह निर्माण का पत्थर है जो विभाजन उत्पन्न करता है। एक वर्ग "साहुल" का तिरस्कार करता है, क्योंकि वे यह देखने से इंकार करते हैं कि ज़रुब्बाबेल के हाथ का "साहुल" "उन सात" के साथ है। "साहुल" के साथ जो "सात" शब्द है, वही हिब्रानी शब्द है जिसका अनुवाद लैव्यव्यवस्था छब्बीस में "सात बार" किया गया है।

तब जकरयाह इस बात को दोहराता है कि जब वह जागता है, तो उसे नहीं पता होता कि वे दो गवाह कौन हैं। इसलिए वह फिर से पूछता है, "ये दो जैतून के पेड़ क्या हैं?" वह फिर दोहराता है, यह पूछते हुए, "ये दो जैतून की डालियाँ क्या हैं, जो दो सुनहरी नलिकाओं के माध्यम से अपने भीतर से सुनहरा तेल उंडेलती हैं?" और गेब्रियल प्रश्न पर जोर देते हुए, फिर से एक प्रश्न के द्वारा जकरयाह के प्रश्न का उत्तर देता है, "क्या तू नहीं जानता कि ये क्या हैं?" जिस पर

जकरयाह उत्तर देता है, "नहीं।" तब गैब्रियल कहता है, "ये दो अभिषिक्त हैं, जो सारी पृथ्वी के प्रभु के सम्मुख खड़े हैं।"

यह अध्याय गब्रिएल द्वारा जकरयाह को उसकी नींद से जगाने से आरम्भ होता है। इसलिए जकरयाह उन कुँवारियों का प्रतिनिधित्व करता है जो आधी रात को जाग उठती हैं, और जब वे कुँवारियाँ जागती हैं, तो उन्हें यह समझने का भारी बोझ लिए हुए दिखाया गया है कि प्रकाशितवाक्य के ग्यारहवें अध्याय के दो गवाह क्या दर्शाते हैं। बाइबल की सभी पुस्तकें आकर प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में मिलती और उसी में समाप्त होती हैं। सभी भविष्यद्वक्ता एक-दूसरे से सहमत हैं, क्योंकि परमेश्वर उलझन के कर्ता नहीं हैं। सभी भविष्यद्वक्ताओं ने जिन दिनों में वे रहते थे, उनकी अपेक्षा अन्तिम दिनों के विषय में अधिक कहा है।

गैब्रियल अल्फा और ओमेगा के सिद्धांत को इस प्रकार लागू करता है कि वह यह पहचानता है कि जरुब्बाबेल मंदिर के निर्माण के कार्य की शुरुआत भी करेगा और उसका समापन भी। उसके कार्य को आरंभ में नींव का पत्थर रखने और अंत में शीर्ष पत्थर रखने के रूप में दर्शाया गया है। जरुब्बाबेल मिलराइट्स के आंदोलन और फ्यूचर फॉर अमेरिका के आंदोलन का प्रतिनिधित्व करता है।

गब्रियल जकरयाह को यह बताता है कि मध्यरात्रि की पुकार का कार्य, चाहे पहले स्वर्गदूत के आंदोलन में हो या तीसरे स्वर्गदूत के आंदोलन में, पवित्र आत्मा की शक्ति से संपन्न होता है।

जब वे सड़क पर मृत पड़े थे, तब संसार उनके मृत शरीरों पर आनंदित हुआ; पर जब वे उठ खड़े हुए, तब संसार डर गया और वे आनंदित हुए। वे इसलिए आनंदित हैं क्योंकि वे जरुब्बाबेल के हाथ में उन 'सात समयों' का तौल-पत्थर देखते हैं। वह तौल-पत्थर वही पत्थर है जिस पर निर्माण किया जाता है, जो बुद्धिमानों को मूर्खों से अलग करता है।

जकरयाह "वे सात" नहीं कहते; वे कहते हैं, "उन सातों"। वे तितर-बितर होने के पच्चीस सौ बीस वर्षों को देखते हैं। "सात" के रूप में अनूदित शब्द वही है जो लैव्यव्यवस्था छब्बीस में "सात गुना" के रूप में अनूदित है, और वह दासत्व के "शाप" का प्रतिनिधित्व करता है, जो इस्राएल के उत्तरी और दक्षिणी दोनों राज्यों पर लाया गया था। दानिय्येल की पुस्तक "उन सातों" की पहचान एक प्रथम और एक अंतिम कोप के रूप में करती है।

विलियम मिलर द्वारा रखा गया नींव का पत्थर "seven times" था, और तीसरे स्वर्गदूत के आंदोलन द्वारा रखा गया शीर्ष पत्थर "seven times" है। जो लोग अंतिम दिनों की आधी रात की पुकार के जागरण में "those seven" को देखकर आनंदित होते हैं, वे मूल्यवान और निकृष्ट के बीच विभाजन और अलगाव के साक्षी होंगे। मूल्यवान लोग पूर्ण एकता में आते हुए आनंदित होंगे, और निकृष्ट लोगों को बहुत देर से पता चलेगा कि उनके पास वह तेल नहीं है जो दो सुनहरी नलिकाओं के माध्यम से उतरता आ रहा है। जो सत्य एक वर्ग के लिए आनन्द का कारण बनेगा, वही दूसरे वर्ग के लिए ठोकर का पत्थर होगा, यद्यपि वह उन सब के देखने के लिए उपलब्ध था जो देखने के लिए इच्छुक थे।

जिस प्रकार आरंभ में, 1856 में, जब फिलाडेल्फियाई एडवेंटवाद लाओदीकियाई एडवेंटवाद में रूपांतरित हुआ, "सात बार" एक परीक्षा बन गया था, उसी प्रकार अंत में फिर "सात बार" एक परीक्षा है, ठीक वहीं जहाँ लाओदीकियाई एडवेंटवाद फिलाडेल्फियाई एडवेंटवाद में रूपांतरित होता है। आरंभ की परीक्षा 1863 में असफल हो गई, जब "सात बार" के बाइबिलीय सिद्धांत को अस्वीकार कर दिया गया। जो लोग 2023 में अंत की परीक्षा में असफल होंगे, वे ऐसा उस अनुभव को अस्वीकार करने के कारण करेंगे, जिसकी मांग लैव्यव्यवस्था छब्बीस के "सात बार" में चिन्हित उपाय करता है।

दानिय्येल की पुस्तक के पहले छह अध्यायों के भविष्यसूचक संदेश पर विचार करने से पहले यह पहचानना महत्वपूर्ण था कि दानिय्येल की पुस्तक "सात काल" का पूर्णतः समर्थन करती है, क्योंकि अध्याय चार और पाँच "सात काल" के विषय में हैं, और वे प्रकाशितवाक्य अध्याय तेरह के पृथ्वी से आने वाले पशु के दो सींगों की शुरुआत और समाप्ति की पहचान करते हैं।

अगले लेख में हम उन पहले छह अध्यायों पर विचार शुरू करेंगे।

परमेश्वर से दानिय्येल को जो प्रकाश मिला, वह विशेष रूप से इन अंतिम दिनों के लिए दिया गया था। ऊलाई और हिदेकेल, जो शिनार की महान नदियाँ हैं, के तटों पर उसने जो दर्शन देखे, वे अब पूर्ति की प्रक्रिया में हैं, और पूर्वकथित सभी घटनाएँ शीघ्र ही घटित होंगी।

जब दानिय्येल की भविष्यवाणियाँ दी गई थीं, तब यहूदी राष्ट्र की परिस्थितियों पर विचार कीजिए।

आइए हम बाइबल के अध्ययन के लिए अधिक समय दें। हम वचन को जैसा हमें समझना चाहिए, वैसा नहीं समझते। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक एक ऐसे आदेश के साथ आरंभ होती है कि हम उसमें निहित शिक्षा को समझें। परमेश्वर घोषित करते हैं, 'धन्य है वह जो पढ़ता है, और वे जो इस भविष्यवाणी के वचन सुनते हैं, और उन बातों का पालन करते हैं जो उसमें लिखी गई हैं; क्योंकि समय निकट है।' जब हम एक लोग के रूप में यह समझेंगे कि यह पुस्तक हमारे लिए क्या मायने रखती है, तो हमारे बीच एक महान जागृति दिखाई देगी। इसे खोजने और अध्ययन करने का हमें आदेश दिया गया है, फिर भी हम उन पाठों को पूरी तरह नहीं समझते जो यह सिखाती है।

"बीते समय में शिक्षकों ने 'Daniel' और 'Revelation' को मुहरबंद पुस्तकें घोषित किया, और लोगों ने उनसे मुँह मोड़ लिया। जिस आवरण की कथित रहस्यपूर्णता ने बहुतों को उसे उठाने से रोके रखा था, उसे स्वयं परमेश्वर के हाथ ने अपने वचन के इन भागों से हटा दिया है। स्वयं 'Revelation' नाम ही इस कथन का खंडन करता है कि यह एक मुहरबंद पुस्तक है। 'Revelation' का अर्थ है कि कोई महत्वपूर्ण बात प्रकट की गई है। इस पुस्तक के सत्य इन अंतिम दिनों में जी रहे लोगों को संबोधित हैं। हम पवित्र बातों के पावन स्थल में खड़े हैं, जहाँ आवरण हट चुका है। हमें बाहर खड़े नहीं रहना है। हमें भीतर प्रवेश करना है—लापरवाह, अनादरपूर्ण विचारों के साथ नहीं, उतावले कदमों से नहीं, बल्कि श्रद्धा और परमेश्वर-भय के साथ। हम उस समय के निकट पहुँच रहे हैं जब 'Revelation' की पुस्तक की भविष्यवाणियाँ पूरी होने वाली हैं।" Testimonies to Ministers, 113.